दादा भगवान परिवार का

जुलाई २०२२

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

मेरी माँ...

मेरी माँ...

संपादकीय

बालमित्रों,

तुझे सब है पता, है ना, माँ? कुछ भी कहे बिना हमारी सभी बातें समझ जाती हैं जो, वो है माँ। बचपन में जब हमें बोलना भी नहीं आता था तब हमें कब भूख लगी, कब नींद आई या कब बुखार आया, ये सब कुछ माँ समझ जाती थीं। और आज भी उतने ही दिल से वे हमारी सारी जरूरतों को पूरा करती हैं। हमें पता भी नहीं चलता कि हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए वे अपनी जरूरतों का त्याग कर देती हैं।

लेकिन फिर भी, कभी हम अपनी मम्मी पर नाराज हो जाते हैं या कभी उन्हें नाराज कर देते हैं। चलो, इस अंक को पढ़कर मम्मी के प्रेम को समझें और निश्चय करें कि मम्मी को कभी दुःख नहीं देंगे।

- डिम्पल मेहता

वर्ष : १० अंक : ४

अखंड क्रमांक : ११२

जुलाई २०२२

....

संपर्कसूत्र

बालविज्ञान विभाग

त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,

अहमदाबाद - कलोल हाइवे,

मु.पो. - अडालज,

जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात

फोन : ९३२८६६११६६/७७

email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2022, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम एक्सप्रेस

ज्ञानी कहते हैं...

पूज्यश्री : मदर के प्रेम को पाने के लिए बच्चे की क्या पात्रता होनी चाहिए?

प्रश्नकर्ता : कुछ भी नहीं।

पूज्यश्री : मदर अपने बच्चे को कभी अकेला नहीं छोड़ती। अपने से अलग नहीं होने देती। मदर का चित्त हमेशा अपने बच्चे में ही रहता है। वह उसे खिलाती-पिलाती है, उसकी देखभाल करती है, उसे प्रेम देती है। वह बीमार हो, उसे कुछ परेशानी हो, हर परिस्थिति में माँ उसकी रक्षा करती है। मतलब मदर को अपने बच्चे के प्रति इतना लगाव होता है कि वह हर तरह से उसका प्रोटेक्शन करती है।

मनुष्यों में तो ऐसा है ही लेकिन, पशु-पक्षियों का जीवन अगर देखें तो माँ अपने बच्चे के लिए अपना जीवन दाँव पर लगा देती है। यदि खुद को मरना भी पड़े तब भी बच्चे को बचाने का जबरदस्त प्रयत्न करती है। अपने बच्चे के लिए सिंह से भी भिड़ जाती है।

मैं नवजात बच्चे की माँ का निरीक्षण करता हूँ। क्योंकि मैं भी कभी इतना छोटा था ही। मेरी माँ ने कैसे मेरी देखभाल की होगी? देखता हूँ तो लगता है, ओहो! माँ अपने बच्चे का इतना ख्याल रखती है?! माँ के लिए बच्चा सर्वस्व होता है। खुद की जरूरतों की परवाह किए बिना माँ अपने बच्चे का ख्याल रखती है।

बड़े होने के बाद बच्चे को यह याद रखना चाहिए कि मेरी माँ ने मुझे कितना वात्सल्य दिया! कितना प्रेम दिया! जबकि बच्चे अपने मोह के कारण सब भूल जाते हैं। वर्ना तो बच्चों को यह नहीं भूलना चाहिए कि मदर का कितना उपकार है!

मदर के प्रेम में बलिदान है, अर्पणता है, त्याग है। उस प्रेम में खुद का कोई स्वार्थ या लाभ नहीं है। इतना प्योर होने के कारण दुनिया में इस प्रेम का बखान किया जाता है।

‘माँ’ तो ‘माँ’ है...

एक माँ अपने बच्चे को संस्कार देने और उसकी उन्नति के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाती है! तो चलो, मिलते हैं कुछ अद्‌भुत माताओं से जिन्होंने अपने बच्चों के जीवन में कई तरह के रोल निभाए हैं।

‘माँ’ - एक योद्धा!

आपने छत्रपति शिवाजी के बारे में तो सुना ही होगा!! एक महान राजा, जिन्होंने मुगलों को हराकर मराठा साम्राज्य की स्थापना की थी। लेकिन इस जीत का सच्चा श्रेय उनकी माता जीजाबाई द्वारा दी गई ट्रेनिंग को जाता है!!

उन्होंने शिवाजी को तलवारबाज़ी, भालाबाज़ी, घुड़सवारी और बाण चलाना सिखाया था! और खुद की रक्षा किस तरह से करना उसकी भी तैयारी माता जीजाबाई ने करवाई थी। उन्होंने बचपन से ही शिवाजी में देशभक्ति की भावना को दृढ़ किया था। जिसके कारण वे एक सफल योद्धा बन सके!

‘माँ’ - एक कथाकारा!

राजमाता जीजाबाई सिर्फ एक योद्धा ही नहीं थीं बल्कि बालक शिवाजी के लिए एक कथाकारा भी थीं। वे बचपन में शिवाजी को रामायण और महाभारत की मज़ेदार धार्मिक कथाएँ सुनाया करती थीं। इन कहानियों के माध्यम से उन्होंने शिवाजी में बहादुरी, भक्ति, धीरज जैसे कई गुणों का सिंचन किया था।

'माँ' - का संस्कार सिंचन!

नन्हें विनायक के घर एक गरीब लड़का रहता था। जब कभी भोजन कम होता तो माँ खुद बासी खाना खा लेती थी, कभी-कभी विनायक को भी बासी खाना देती, लेकिन उस गरीब बालक को कभी भी बासी या ठंडा खाना नहीं देती थी।

कैसी अद्भुत है यह माता ! बचपन से ही जिसने अपना सुख दूसरों को देने के संस्कार अपने बच्चे को दिए। जिस माता का ऐसा संस्कार सिंचन होता है, उनका पुत्र भी अद्भुत होता है इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। वह पुत्र था, विश्वविख्यात संत विनोबा भावे और उनकी माता का नाम रखुबाई था।

'माँ' - का समर्पण!

जब विनायक एक्कीस वर्ष के हुए तब उन्होंने काशी जाकर साधना करने का निश्चय किया।

जब यह बात सबको पता चली, तब एक स्त्री ने निंदा करते हुए कहा कि, 'आजकल के बच्चों का क्या भरोसा ! कितने कष्ट उठाकर उन्हें बड़ा करो और बड़े होकर वे घर छोड़कर भाग जाते हैं !'

यह सुनकर तुरंत ही विनोबा की माता ने कहा, 'मेरा बेटा भागा नहीं है। उसने तो अपनी साधना और लोककल्याण के लिए गृहत्याग किया है।'

माता रखुबाई ने अपने पुत्र से यह आशा कभी नहीं रखी कि उनका पुत्र बुढ़ापे में उनकी सेवा करे। लेकिन उन्हें अपने पुत्र को उसके खुद के कल्याण और जगत् के कल्याण के लिए समर्पण करने का गर्व था! कितना अद्भुत दैवी गुण! पुत्र ने भी अपनी देवी जैसी माता के समर्पण की लाज रखी ! गांधीजी के यज्ञ में जुड़कर संत विनोबा भावे ने देश के उद्धार के लिए अपना सारा जीवन होम कर दिया!

ऐसा मत सोचना कि ऐसी माताएँ तो भूतकाल में ही होती थीं! ऐसी माताएँ आज भी हैं जिनका पूरा जीवन बच्चों की देखभाल में गुजर जाता है!

'माँ' - मेरी परछाई!

अदिती अशोक, २४ वर्ष की एक लड़की, जिसने टोक्यो ओलम्पिक में गोल्फ के गेम में चौथा नंबर हासिल करके इतिहास रचा। अदिती की इस सफलता के पीछे परछाई बनकर खड़ी महेश्वरीजी, अदिती की मम्मी, का बहुत बड़ा हाथ है।

जैसे क्रिकेट में बैट होता है उसी तरह गोल्फ खेलने के लिए गोल्फ क्लब होता है। विभिन्न प्रकार के शॉट्स के लिए विभिन्न प्रकार के गोल्फ क्लब का उपयोग किया जाता है। और गोल्फ क्लब तथा दूसरे साधनों को संभालने के लिए हर प्लेयर के साथ उनका एक हेल्पर होता है जो कैडी (Caddie) कहलाता है। अदिती के कैडी बने थे, उनकी मॉम, महेश्वरीजी। कैडी बनकर वे अदिती के गोल्फ क्लब का ध्यान रखती थीं और ज़रूरत के अनुसार गोल्फ क्लब देतीं। इसके लिए उन्होंने मैदान कैसा होता है, गेम कैसे खेलते हैं आदि सभी बातों की जानकारी हासिल की थी।

इतना ही नहीं, अच्छे-अच्छे घबरा जाए ऐसी ओलम्पिक की स्पर्धा में वे अदिती के साथ खड़ी रहीं और उसे हिम्मत और सपोर्ट दिया जिससे वह बिना किसी टेन्शन के खेल सकी!

झवेरबा का संस्कार सिंचन...

झवेरबा ने बेटे के जन्म से पहले आठ वर्ष तक घी नहीं खाने की अंबा माँ के पास मन्नत की थी। उसके बाद बेटे का जन्म होने पर उसका नाम अंबा के लाल यानी अंबालाल (दादा भगवान) रखा।

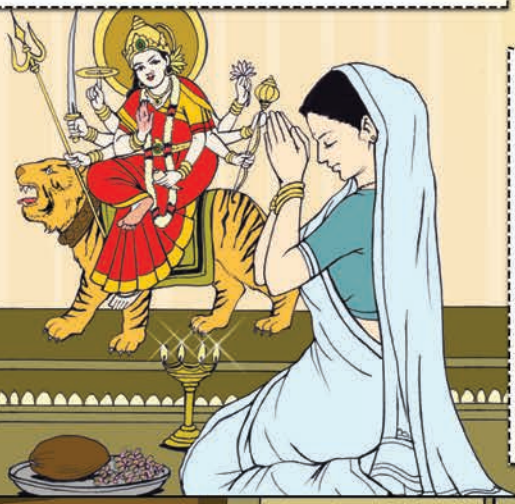

अंबालाल छोटे थे तभी से सुंदर और मनमोहक थे। वे बहुत ही चतुर और बहादुर थे, साथ ही साथ मज़ाकिया और शरारती भी थे। उनके गोलमटोल प्रफुल्लित चेहरे के कारण पड़ोस में रहने वाली पुणीबा ने प्यार से उनका नाम 'गलगोटिया' (घर का नाम) रखा। गाँव के लोग उन्हें प्यार से 'गलो' कहकर बुलाते।

उन्हें बचपन में माता की हूँफ और सामीप्य बहुत ज्यादा मिला। कभी झवेरबा को बाहर जाना होता तो बालक अंबालाल को सोते समय उनके हाथ में अपनी मुलायम साड़ी पकड़ाकर जाती। ताकि माँ पास ही हैं ऐसी हूँफ लगे न!

बच्चे माँ के साथ रहकर बड़े होते हैं। उस दौरान वे अपने जीवन का उमदा पाठ सीखते हैं। माँ झवेरबा ने सुंदर संस्कारों का सिंचन करके बालक अंबालाल में उमदा चारित्र की गढ़ाई की। यदि अच्छी तरह से देखभाल हो तो पौधा भी अच्छी तरह बढ़ता है।

माँ से प्राप्त ऐसे संस्कार बालक को महावीर बनाएँगे या नहीं बनाएँगे?

बेस्ट क्वीन एण्ड प्रिन्सेस

मीरा ने गिटार हाथ में लिया ही था कि उसे मम्मी की आवाज सुनाई दी, "मीरा बेटा, यहाँ आना तो... आज चारु नहीं आने वाली है।"

"ओह नो! इसका मतलब मम्मी मुझे बरतन धोने के लिए बुला रही है। इस आदेश से बचना तो मुश्किल है," मीरा ने बेमन से बरतन धोए।

काम खत्म करने के बाद वह अपना फोन लेकर बिस्तर पर लेट गई। वह कुछ खोजने लगी, "अरे यार! ये डिशवॉशर तो बहुत महँगे हैं..." वह फोन एक तरफ रखने ही वाली थी कि अचानक उसकी नज़र स्क्रीन पर आए एक ऐड पर गई।

"क्या बात है...!" ऐड देखते ही वह सीधी बैठ गई और दौड़ते हुए अपनी मम्मी के पास गई।

"ना बाबा ना..."

"लेकिन मम्मी ट्राइ करने में क्या हर्ज़ है? हमें कहाँ कुछ दाँव पर लगाना है?"

सुधा ने अपनी बेटी की आशा भरी नज़रों को देखा और 'बेस्ट क्वीन ऐन्ड प्रिन्सेस' कॉन्टेस्ट में भाग लेने के लिए मान गई।

सुधा और मीरा कॉन्टेस्ट के लिए शॉर्टलिस्ट हो गए। उन्हें एक हॉल में बुलाया गया।

"हलो और नमस्ते मित्रों! मैं हूँ आपका होस्ट और दोस्त अमन आहुजा। इस दिलचस्प, रोमांचक और मज़ेदार 'माँ-बेटी' कॉन्टेस्ट में आपका स्वागत है। इस कॉन्टेस्ट के लिए टोटल दस कन्टेस्टन्ट शॉर्टलिस्ट हुए हैं।"

सुधा और मीरा ने अपने जैसी अन्य नौ 'माँ-बेटियों' की जोड़ी की तरफ नज़र डाली।

"इस कॉन्टेस्ट में टोटल तीन राउंड हैं। इस धमाकेदार कॉन्टेस्ट का प्राइज़ तो आप सब को पता ही है!! विजेता माँ-बेटी की जोड़ी को मिलेगा, एक शानदार 'अल्ट्रा वेगन डिशवॉशर'।" तालियों की गड़गड़ाहट से हॉल गूंज उठा।

"मित्रों, हो सकता है यह जर्नी आसान ना हो ! लेकिन हाँ, एक बात तो पक्की है। सभी को बहुत मज़ा आने वाला है। तो चलो, पहला राउन्ड शुरू करते हैं, जिसका नाम है 'डेर २ पेर'।"

नाम सुनते ही मीरा के हृदय की धड़कन तेज़ हो गई और सुधा के रोंगटे खड़े हो गए।

"तो, इस पहले राउन्ड में प्रत्येक पेर को एक डेर, यानी कि चैलेन्ज दिया जाएगा। डेर सुनकर आपको यह तय करना होगा कि आप माँ-बेटी में से कौन यह डेर पूरा करेगा। तो आप तैयार हो?"

प्रत्येक जोड़ी को अलग-अलग 'डेर' मिला था। अब मीरा और सुधा की बारी थी।

दोनों के सामने एक डिश रखी गई जिसमें पावभाजी थी। मीरा ने सोचा, 'डेर इतना सिम्पल तो हो नहीं सकता!'

"यह पावभाजी देखने में स्वादिष्ट लग रही है। लेकिन इसकी खासियत यह है कि कोई आम इंसान जितना तीखा खा सकता है यह उससे तीन गुना ज्यादा तीखी है। तो बोलिए, आप में से कौन ये पावभाजी खाने आएगा?" अमन आहुजा ने हँसते-हँसते पूछा।

'ओह! हम लोग तो बिल्कुल तीखा नहीं खा सकते। पहले ही राउन्ड में सब चौपट!' मीरा का चेहरा उतर गया।

तभी सुधा ने आगे आकर कहा, "मैं यह डेर करूँगी।"

मीरा अपनी मम्मी से कुछ पूछती उससे पहले ही वह प्लेट के पास पहुँच गई और डेर शुरू हुआ। सुधा ने आराम से और इन्ट्रेस्ट से पावभाजी खाई और डेर पूरा किया।

मीरा अपनी मम्मी को देखती ही रह गई। "मम्मी, आपका मुँह तो नहीं जला ना? आप तो तीखा खा ही नही सकती। मैने तो कभी आपको तीखा खाते या बनाते हुए नहीं देखा ..."

सुधा ने मुस्कुराते हुए कहा, "क्योंकि मेरे बच्चों को तीखा पसंद नहीं है..."

"वॉट!?" मीरा को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने सोचा, मम्मी ने कितनी आसानी से और खुशी से अपने पसंद के टेस्ट के खाने का त्याग किया और किसी को पता भी नहीं चलने दिया। भले ही मम्मी के लिए यह एक छोटी सी बात थी, लेकिन मीरा के लिए तो यह मम्मी द्वारा किया गया एक बड़ा बलिदान था।

सुधा और मीरा नेक्स्ट राउन्ड के लिए सिलेक्ट हो गए।

"तो दूसरे राउन्ड का नाम है - 'सच का दम।' हाँ, सत्य की शक्ति। इस राउन्ड में माँ-बेटी दोनों भाग लेंगे। दोनों ने आज तक एक-दूसरे से जो बात छुपाई है वह बात कहनी है। और फिर हम देखेंगे सच का दम। तो तैयार हो आप सब?"

एक धमाकेदार म्यूज़िक के साथ राउन्ड की शुरुआत हुई। जजेस एक के बाद एक कन्टेस्टेन्ट का सच-झूठ पकड़ते गए। अब सुधा और मीरा की बारी थी। दोनों समझ गए थे कि राउन्ड जीतने के लिए सच बोलना अनिवार्य है।

मीरा के हाथ में माइक दिया गया। उसके दिल की धड़कनें तेज़ हो गईं ।

"मम्मी, क्या आपको याद है कि दो सप्ताह पहले मैंने आपसे कहा था कि मैं सिया के घर पर ग्रुप स्टडी के लिए जा रही हूँ?"

"हाँ।"

"मम्मी, उस रात हम मूवी देखने गए थे..."

"क्या?" सुधा कुछ कहते-कहते रूक गई। जजेस ने एक-दूसरे की तरफ देखा और पेपर पर कुछ नोट किया।

अब सुधा की बारी थी। उसने माइक हाथ में लिया, "मीरा बेटा, मैंने तुम्हें कहा था न कि तुम्हारें मामा ने तुम्हें गिटार गिफ्ट किया है। लेकिन बात तो यह है कि मेरी सोने की चेन जो मुझे पसंद नहीं थी इसलिए..."

सुधा से आगे कुछ कहा नहीं गया। लेकिन मीरा ने अपनी मम्मी की आँखों में सच पढ़ लिया था और जजेस ने फैसला ले लिया।

सुधा और मीरा की जोड़ी थर्ड और फाइनल राउन्ड के लिए सिलेक्ट हो गई।

"ओ.के, तो अब फाइनल राउन्ड खेलने के लिए हम फिर से नेक्स्ट सन्डे इसी जगह पर इसी समय मिलेंगे। फाइनल राउन्ड का नाम है - हम साथ टैलेन्टदार हैं। इस राउन्ड में माँ-बेटी की जोड़ी को एक साथ मिलकर कुछ बनाना है। बस, शर्त यह है कि दोनों का समान इन्वॉल्वमेन्ट जरूरी है।" अमन आहुजा ने अनाउन्स किया।

क्या बनाना है यह तय करने में मीरा और सुधा को ज्यादा देर नहीं लगी। सुधा 'केक-एक्सपर्ट' थी और मीरा को केक बनाना सीखना था।

तीसरे राउन्ड का दिन आ गया। सारा सामान टेबल पर व्यवस्थित रखा था । बज़र बजा और सभी ने काम शुरू किया। सुधा और मीरा ने मिलकर सभी सामग्री को मिक्स किया।

"लाओ मम्मी, मैं बैटर हिलाती हूँ," कहकर मीरा ने मम्मी के हाथ से चम्मच ले लिया। थोड़ी देर में मीरा थक गई।

"चलो मम्मी, अब इसे ओवन में रख देते हैं।"

"नहीं बेटा, अभी इसे और हिलाने की ज़रूरत है।" मम्मी ने कहा।

"नहीं मम्मी, हो गया है।"

"मुझे दो, तुम थक गई हो तो मैं कर देती हूँ।"

मीरा चिढ़ गई। "नहीं मम्मी, ऐसा नहीं है कि मुझे नहीं करना है। लेकिन इसे ज्यादा हिलाने की ज़रूरत नहीं है।"

सुधा ने मीरा के हाथ से चम्मच लेकर थोड़ी देर और हिलाने के बाद ही केक ओवन में रखा। मीरा और ज्यादा चिढ़ गई। जब केक को बहार निकाला तो वह ठीक नहीं बना था।

सुधा शांत थी पर मीरा को गुस्सा आ रहा था, "मम्मी, आपके कारण केक बिगड़ गया। मैंने आपको कहा था कि इतना हिलाने की ज़रूरत नहीं है।"

फाइनल रिज़ल्ट की घोषणा एक सप्ताह के बाद होने वाली थी। घर वापस आते समय सुधा को कुछ काम याद आ गया। "मीरा, बेटा तुम घर पहुँचो। मैं थोड़ी देर में आती हूँ।"

पूरे रास्ते मीरा अपनी मम्मी को मन ही मन ब्लेम करती रही। पिछले दो राउन्ड में मम्मी के लिए नोटिस की हुई सारी अच्छी बातें वह भूल गई। उसके मन में यह बात घर कर गई कि मम्मी के कारण केक बिगड़ गया। घर आकर वह बिस्तर पर लेटी ही थी कि डोरबेल बजी।

"ये...यही एड्रेस है ना !" एक युवक ने हाँफते हुए पूछा। युवक के हाथ

में पकड़े हुए ब्राउन पर्स को मीरा पहचान गई।

"हाँ, ये पर्स तो मेरी मम्मी का है। क्या हुआ?"

"उनका एक्सिडेन्ट हो गया है। उन्हें हॉस्पिटल ले गए हैं।"

मीरा एकदम से घबरा गई। वह काँपने लगी। एक ही क्षण में जैसे उसकी पूरी दुनिया पलट गई हो।

अगर मम्मी को कुछ सिरियस हुआ होगा तो क्या होगा? "मम्मी के बिना जीवन कैसा होगा?" "अगर मैंने मम्मी के साथ झगड़ा नहीं किया होता तो मम्मी काम के लिए बाहर नहीं जाती," मीरा को बहुत पछतावा हुआ। उसकी आँखों से आँसू छलक आए। उसने आँसू पोंछकर लिफ्ट का बटन दबाया। थोड़ी ही देर में लिफ्ट का दरवाजा खुला और उसमें से मम्मी बाहर निकली।

मीरा ने मम्मी को गले से लगा लिया!

"अरे अरे, अभी तो मैडम झगड़ा कर रही थी, फिर अचानक क्या हुआ?"

मीरा ने पर्स दिखाया। कोई कहने आया था कि इस महिला का एक्सिडेन्ट हुआ है।

"ओह, हाउ सैड! अभी--अभी बस में मेरा पर्स किसी के साथ बदल गया था। आओ, हम हॉस्पिटल चलते हैं।" मीरा को बहुत राहत हुई। पूरा सप्ताह वह मम्मी की परछाई बनकर उनके साथ रही। कॉन्टेस्ट के रिजल्ट के दिन सुधा और मीरा समय पर स्टूडियो पहुँच गए।

आज हमें अपनी 'बेस्ट क्वीन-प्रिन्सेस' की जोड़ी का पता चलेगा। एनी गेसेस?" अमन आहुजा ने पूछा।

ऑडियन्स में से अलग-अलग नाम सुनाई दिए। अमन आहुजा ने एक कवर खोलकर नाम की घोषणा की, "बेस्ट जोड़ी इज़-क्वीन दर्शना और उनकी प्रिन्सेस सलोनी!"

सुधा को हारने का दुःख नहीं था लेकिन इस बात का उसे अफसोस था कि मीरा की आशा टूट गई। मीरा ने धीरे से मम्मी के कान में कहा, "मेरा सच्चा प्राइज़ तो मेरे बाजू (पास) में ही खड़ा है।" सुधा हँस पड़ी।

एक सप्ताह बाद सुधा को फिर से चारु का फोन आया कि वह नहीं आने वाली है। यह बात सुनकर मीरा तुरंत ही रूम से बाहर आई। "आपकी चारु, आपका डिशवॉशर आपकी सेवा में हाज़िर है!"

माँ-बेटी एक-दूसरे के गले लग गईं और हँसते-हँसते साथ में मिलकर बर्तन धोए।

My Creation

कितनी ही ऐसी बातें होंगी जो आज तक आपने अपनी मम्मी को नहीं बताई होगी। अगर आपको ऐसा चान्स मिले कि आप अपनी मम्मी को अपने दिल की सभी बात बता सको, तो आप क्या-क्या बताओगे? चलो, मम्मी को एक पत्र लिखते हैं, जिसमें दिल खोलकर उन्हें सभी बातें कह दें।

और हाँ, क्राफ्ट एक्टिविटी में एक सुन्दर इन्वेलप बनाकर यह पत्र मम्मी को दें! और इन्वेलप का फोटो हमारे साथ शेयर करें। ९३१३६६५५६२

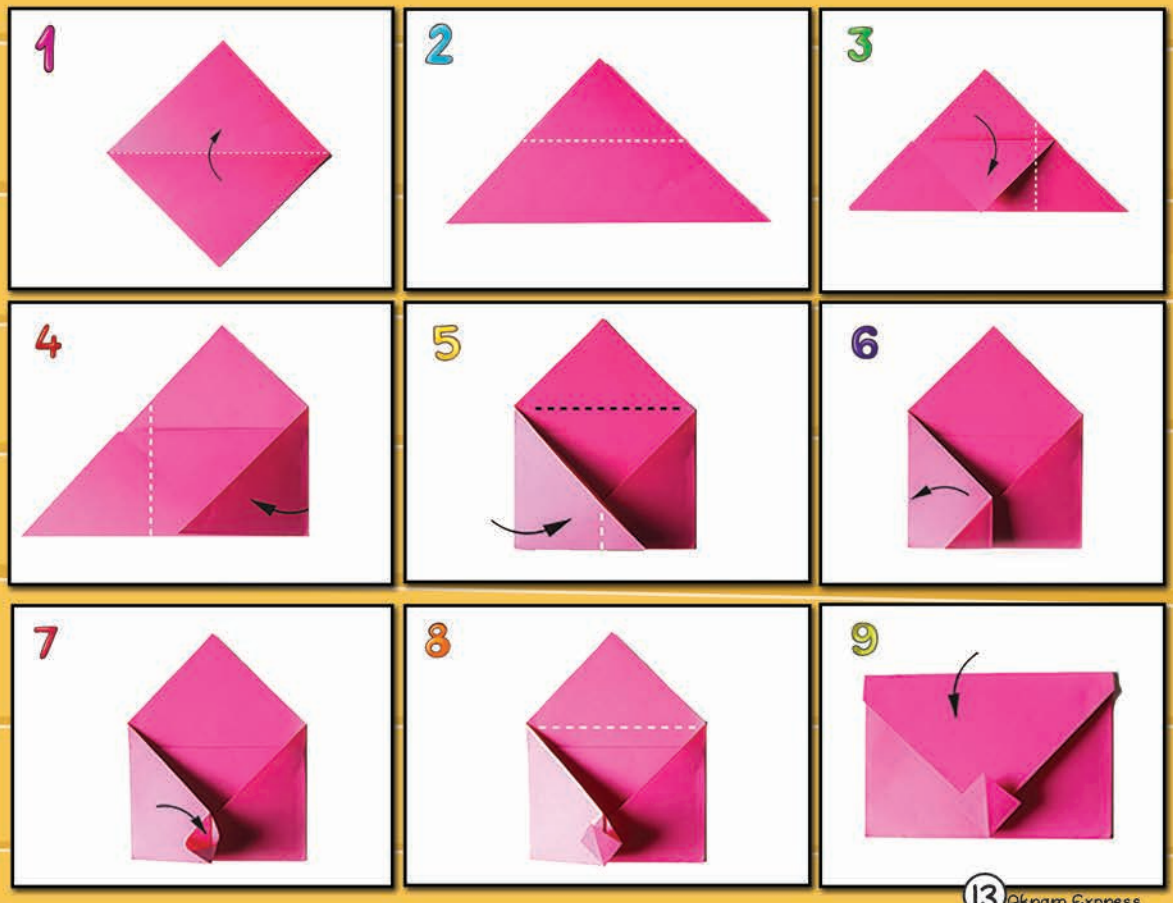

वाय, माँ?

सनी आगे कुछ बोल पाता इससे पहले ही उसकी माँ सैन्ड्रा ने उसे एक किक मारी।

सैन्ड्रा ने अपने बेटे को कोई जवाब न देते हुए उसे दूसरी किक मारी!

लेकिन सनी के पैर तो बहुत कमजोर थे। वह जैसे-तैसे करके खड़ा हुआ।

तभी उसकी मम्मी ने उसे फिर से किक मारी और वह नीचे गिर पड़ा।

सनी के लिए यह आसान नहीं था। लेकिन उसके पास दूसरा कोई उपाय भी नहीं था।

रास्ते में सनी ने एक बंदर के बच्चे को उसकी माँ के गोदी में सोते हुए देखा।
कितना लकी है यह बच्चा ! उसकी मम्मी उसे कितना प्यार करती है !
सनी की नज़र एक पेड़ पर पड़ी।
चिड़िया की मम्मी उसे कितना फाइन-फाइन खाना खिला रही है !
आगे जाने पर,
वाउ ! बेबी पान्डा की माँ उसे कितने प्रेम से झूला झूला रही है !

सबकी मम्मी अपने बेबिज़ को कितना लव करती हैं। मेरी मम्मी क्यों मुझे लव नहीं करती हैं?

अभी तो जस्ट दुनिया में मेरी एन्ट्री हुई है। क्या मैं इतना खराब हूँ कि मुझे प्यार करने के बदले माँ मुझे किक मारती हैं ? ! क्या माँ हमेशा मुझसे नाराज ही रहेंगी ?

तभी सनी को एक गर्जना सुनाई दी। उसने देखा तो...

यह क्या ? ये दो चमकती हुई आँखें किसकी हैं?

सनी आगे और सिंह पीछे। सिंह को पता न चले इस तरह सनी घास के बीच में जाकर छुप गया।

दूर झाड़ियों में से एक सिंह बाहर आया। सनी बहुत डर गया और जान बचाकर भागा।

कितना भंयकर सिंह था! अगर मैं भाग नहीं पाता तो वह मुझे खा ही गया होता !
तभी सनी की नज़र अपने पैरों पर पड़ी।
मेरे पैर ! जब पैदा हुआ था तब कितने कमज़ोर थे! और अब, कितने स्ट्राँग हो गए हैं !
कैसे ? अगर माँ ने मुझे किक्स नहीं मारी होती, तो मैं भागना सीख ही नहीं पाता।
इसका मतलब कि किक्स मारकर माँ मुझे स्ट्राँग बना रही थीं।
माँ तो मुझे प्यार करती ही हैं ! बस, लव को एक्सप्रेस करने की उनकी स्टाइल सबकी मम्मी से अलग है !
घर आते ही सनी सैन्ड्रा के गले लग गया।
थैंक यू माँ ! आपके साथ तो मैं सेफ हूँ, लेकिन जंगल में सेफ रहने के लिए आपने ही मुझे स्ट्राँग बनाया है !

क्यों नहीं सारी दुनिया तेरी तरह !!

१. ओरैंगउटैन

ओरैंगउटैन और उसकी मम्मी के बीच बहुत स्ट्रॉंग बॉन्ड होता है। २ वर्ष तक बच्चे खाने-पीने और घूमने-फिरने के लिए पूर्ण रूप से अपनी मम्मी पर निर्भर होते हैं। उनके ७-८ वर्ष के होने तक मम्मी उन्हें भोजन ढूँढना, भोजन करना और घर बनाना सिखाती है। इसलिए बड़े होने के बाद भी ओरैंगउटैन उनकी मम्मी से मिलने जाते हैं!

२. पोलर बेर

पोलर बेर ट्विन बेबीज़ को जन्म देते हैं। उनके बच्चें ठंडे वातावरण में रहना और जीवन जीना सीख जाएँ तब तक उनकी रक्षा के लिए पोलर बेर ज़मीन में गुफा बनाते हैं।

जन्म के बाद दो-तीन महीनों तक बच्चे इस गुफा में रहते हैं। बच्चों को अपना दूध पिलाकर और गरमाहट देकर वे उन्हें सुरक्षित रखते हैं।

३. चीता

चीता की मम्मी अपने बच्चों को एकांत में पालती है। बच्चे जब तक १८ महीने के नहीं हो जाते तब तक हर चार दिन में अपना ठिकाना बदलती रहती है, जिससे कोई शिकारी उनकी सुगंध से उन्हें ढूँढ़ न सके।

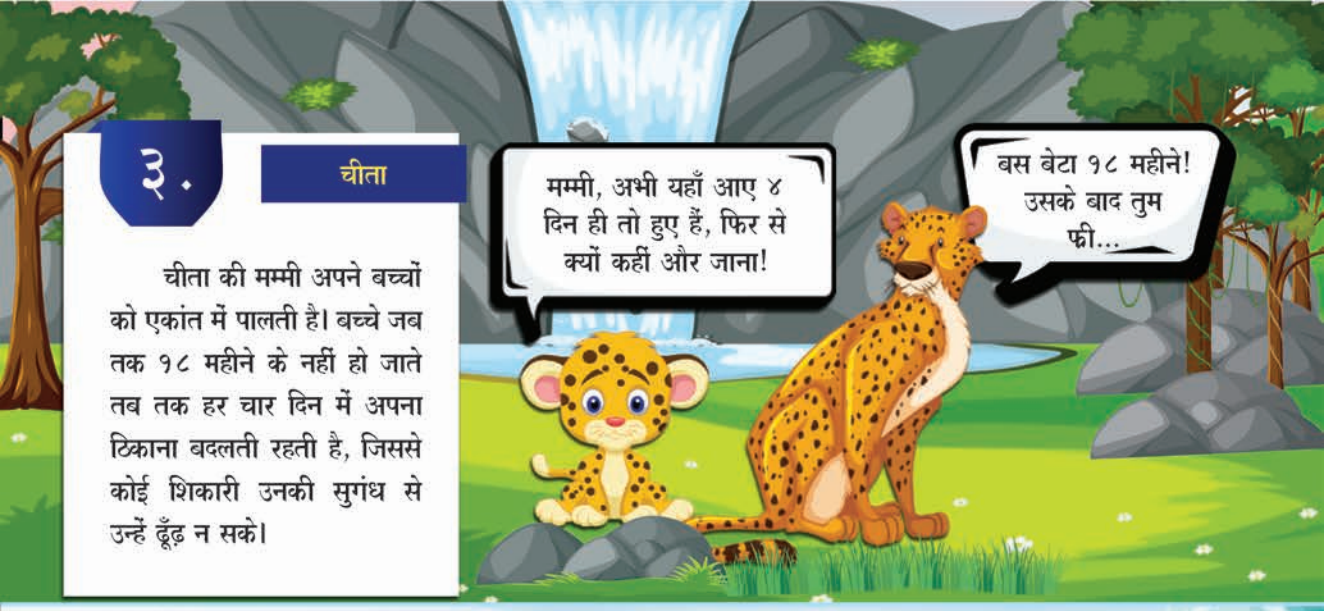

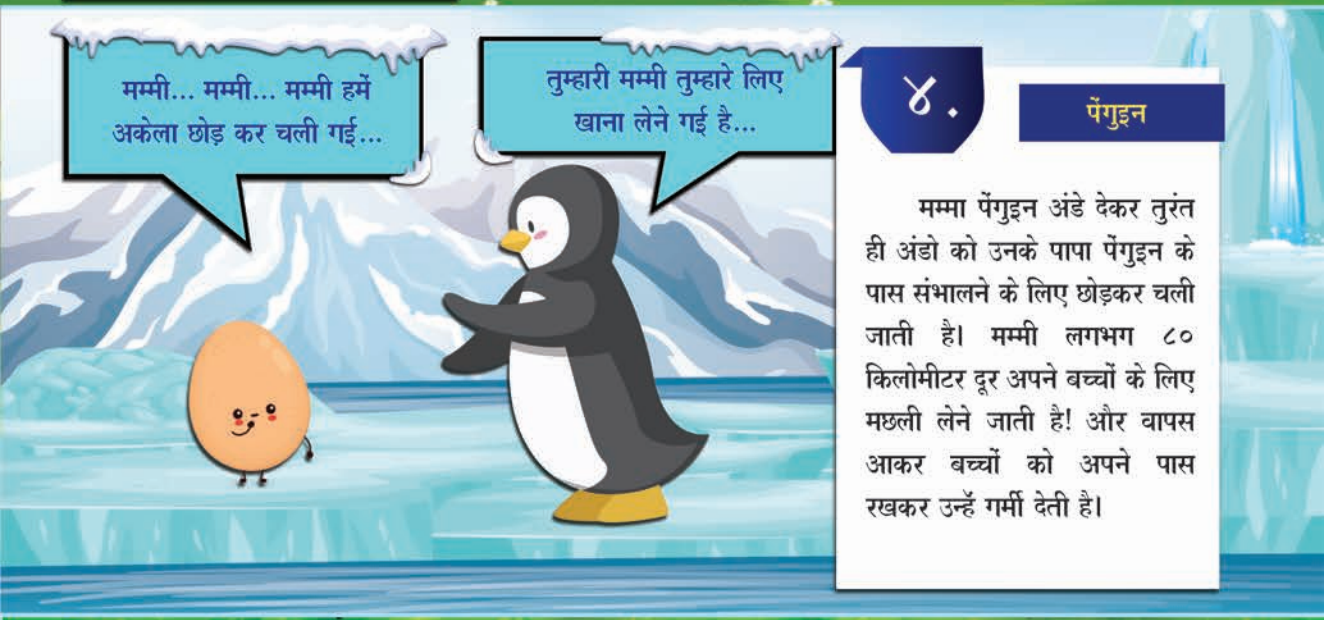

४. पेंगुइन

मम्मा पेंगुइन अंडे देकर तुरंत ही अंडो को उनके पापा पेंगुइन के पास संभालने के लिए छोड़कर चली जाती है। मम्मी लगभग ८० किलोमीटर दूर अपने बच्चों के लिए मछली लेने जाती है! और वापस आकर बच्चों को अपने पास रखकर उन्हें गर्मी देती है।

५. पान्डा

जब पान्डा का जन्म होता है तब वे अंधे और बहुत ही छोटे होते हैं। उनका वजन १ से ३ तीन किलो तक होता है। जबकि मम्मा पान्डा का वजन १३६० किलो जितना होता है। बेबी पान्डा को कोई कष्ट ना हो, उसे कुछ लग ना जाए इसलिए उनके जन्म से लेकर तीन महीनों तक मम्मा पान्डा हमेशा उसे अपनी गोद में उठाकर घूमती है।

Akram Express

July 2022
Year : 10, Issue : 4
Conti. Issue No.: 112

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

Kids.
dadabhagwan.org

SCAN ME

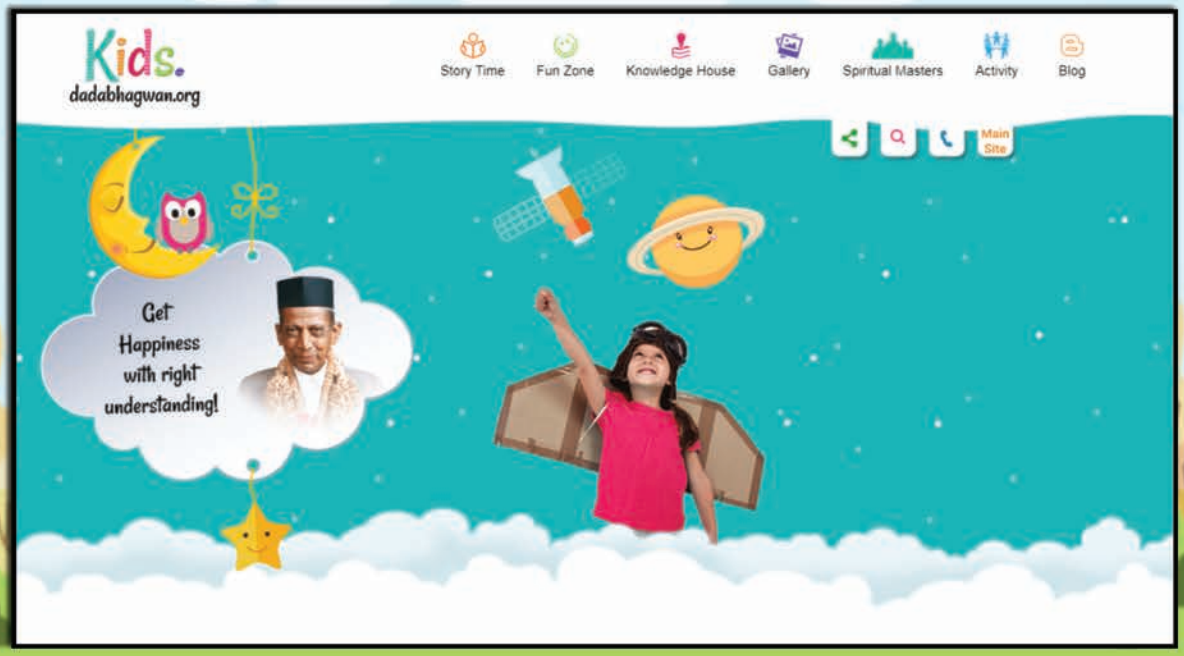

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेवल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेवल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025